जीयन्दाणी मर गया

जल्दबाजी करने के बाद भी ऑफिस समय पर पहुंचना मेरे लिए नामुमकिन सा है। उस दिन नाटक लिख कर समाप्त किया था इसलिए खुश था। बस एक ही धुन सवार थी, जीयन्दाणी के ऑफिस में लंच टाईम तक पहुंच कर उसे यह नाटक सुनाने की। हाथों को फूंक मारकर गर्म किया। फाईल को पढ़ना शुरू किया ही था कि फोन की घण्टी बज उठी। यारी दोस्ती के दायरे ने परेशान ही कर दिया है। "पता नहीं किसका फोन है?" सोचते हुए रिसीवर उठाया। फोन पर कोई भर्राई हुई सी आवाज थी। मैंने पूछा, "भाई कौन हो? जीयन्दाणी हो क्या?"

भर्राई हुई आवाज ने बताया, "जीयन्दाणी मर गया।"

"क्या? जीयन्दाणी मर गया!" कहते हुए मेरे हाथ से रिसीवर फिसल गया। रिसीवर को पुन: उठाकर मैंने पूछा था, "कब?"

"आज सुबह, आठ बजे।"

मेरे तो होश ही उड़ गए। अभी पांच मिनट पहले ही तो जीयन्दाणी से मिलने की बात सोच रहा था। सच कहा है किसी ने, बन्दे के मन में कुछ मालिक के मन में कुछ। अब मेरे 'नव आत्मा' नाटक का क्या होगा?

मन ने फटकार लगाई, "तुम्हे जीयन्दाणी की मौत का दुख नहीं है। बस इस बात का अफसोस है कि अब ड्रामा नहीं हो पाएगा।"

मैंने जवाब दिया, "हां, मैंने यह नाटक 'नव आत्मा' लिखते समय जिस चेहरे को जेहन में रखा था, वह जीयन्दाणी ही था। वही तो मेरे नाटक की आत्मा था। उसका लम्बा चौड़ा शरीर जब रंगीन रौशनी के बीच आकर कहता कि साथियो! एक आईने पर पैर रखा और वह टुकड़े-टुकड़े हो गया। फिर आईने के हर टूटे टुकड़े में नजर आने लगा, नव आत्मा का अक्स। जमाने ने विश्वास के आईने पर नास्तिकता का पत्थर मारा है। लेकिन अजीब बात यह हुई है कि हर टुकड़ा बन गया है, नव आत्मा का अक्स। इस जमाने में हजारों इन्सान भगवान बन बैठे हैं, जिन्होंने देश के लिए स्वयं को उत्तरदायी बना डाला है...हम सिन्धियों ने भी...।"

अचानक पीठ पर किसी ने हाथ मारा। मुड़कर देखा सावलाणी था। "अरे दोस्त, अपना जिन्दाणी मर गया।"

"नहीं, नहीं।"

"अभी-अभी फोन आया था।"

"दोस्तों को खबर दी है?"

"मेरा तो मन ही खराब हो गया है।" मैं गाल पर हाथ टिकाकर बैठ गया।

"अरे यार! वहां 'सम्मान' नाटक के लिए हॉल बुक करवाने गए थे। अब जीयन्दाणी के बिना मुख्य रोल कौन करेगा?"

"मेरे नए नाटक 'नवआत्मा' में भी तो जीयन्दाणी का ही मुख्य रोल था।"

सावलाणी हट्टा-कट्टा और जिन्दादिल साथी है हमारा। नाटक की परमीशन लेना, हॉल बुक करवाने जैसे कई काम हम उसे ही सौंपते हैं। कई बार तो डायरेक्टर साहब उसकी प्रशंसा करते हुए कह देते हैं, "सावलाणी के बिना यह नाटक इतना जल्दी मंचित हो ही नहीं सकता था।" मगर आज सबको यह पता चल जाएगा कि जीयन्दाणी के बिना तो नाटक का स्टेज पर आना ही नामुमकिन है।

"छोड़ो न यार। तुम तो औरतों की तरह आंसू बहा रहे हो। देखो मेरे हौसले को देखो, मेरे लिए तो वह यार, दोस्त, सलाहकार और पता नहीं क्या-क्या था। अभी परसों ही तो उससे मुलाकात हुई थी।"

"सावलाणी! जरा बताओ तो, वह किसका यार नहीं था? आज तो हमसे भी ज्यादा हमारी कौम ने कुछ गंवा दिया है। जब वह सिन्धियों के दुख दर्द का इजहार करता था तब उसके शब्द इतने ज्यादा जज्बाती हो जाते थे, जैसे पूरी कौम का दर्द उसमें समा गया हो।" मेरी आवाज भारी हो गई।

सावलाणी ने मेरा हाथ खींचते हुए कहा, "बस यार, रूह था वह रूह, बिना किसी भेदभाव के सब लोगों से घुलमिल जाता था। भारत में नई सामाजिक क्रान्ति लाने के लिए ऐसे ही लोगों की जरूरत है। अब दोस्त, यहां बैठकर रोने से कुछ नहीं होगा। चलो, उसकी पत्नी के पास चलकर पूछें कि अचानक यह क्या हो गया?"

मैं लम्बी सांस लेता हुआ खड़ा हो गया। सावलाणी ठीक ही कह रहा था। मैंने अपने बॉस से इजाजत लेकर दूसरे दोस्तों को भी यह खबर दे डाली। क्योंकि मैं नाटकों के कारण पहले ही बहुत छुट्टियां ले चुका था इसलिए काफी अनुनय विनय के बाद छुट्टी मिल पाई।

सावलाणी बोला, "मेरा दोस्त हीरानन्दाणी कार लेकर आ रहा है। साथ ही चलते हैं।"

मैंने कहा, "फिर तो उषा को भी फोन करके बुला लेते हैं। जीयन्दाणी के नाटकों में उसकी आत्मा बसती थी।"

सावलाणी बोला, "उसे फोन पर यह मत बता देना कि जीयन्दाणी मर गया, वरना ऑफिस में ही रोना पीटना शुरू कर देगी।"

मैं भी जानता हूं कि हमारी इस सुन्दर सी कलाकार का रुदन उसके पल्लू में बंधा मेहमान सा है। लेकिन वह बिना किसी कारण के छुट्टी कैसे ले पाएगी?

हमें हैरानी हुई थी जब वह फोन सुनते ही बोल पड़ी, "अभी आ रही हूं।"

गजब का अधिकार है इन सुन्दर लड़कियों का अपने अधिकारियों पर।

अब समस्या यह थी कि इस लड़की को जीयन्दाणी की मौत का समाचार कैसे दिया जाए? अगर इसने ऑफिस में रोना शुरू कर दिया तो पूरे ऑफिस में पेन डाउन स्ट्राइक शुरू हो जाएगी।

सावलाणी ने सुझाया, "उसे बाहर चल कर बता देंगे।"

मैंने कहा, "बाहर जाकर बताने से तो समस्या और बढ़ जाएगी। उसे रोता देख रास्ते के आते—जाते लोग पता नहीं क्या सोचेंगे?"

"तो बताएंगे ही नहीं। अरे, ऐसी लड़की को फोन ही नहीं करना चाहिए था।"

"सुनो सावलाणी। उसे कहेंगे कि जीयन्दाणी सीरियस है।"

यह सुझाव सावलाणी को पसन्द आया, अब बारी इन्तजार की थी।

आखिरकार हम सब हीरानन्दाणी की कार में बैठकर जीयन्दाणी के घर की तरफ चल दिए। जीयन्दाणी की बात आते ही हम दोनों चुप हो जाते। उषा की बेताबी ने उसकी पलकों को भिगोना शुरू कर दिया था। जीयन्दाणी के घर की बेल बजाने पर उसकी पत्नी ने दरवाजा खोला। वैसे तो उसकी निगाहें हम सब पर आग बरसाती हैं क्योंकि देर रात तक जीयन्दाणी को नाटक के लिए रोकने के जिम्मेदार हम ही थे। हम भी उसकी पत्नी से चिढ़ते थे। परन्तु आज, आज तो हम सबकी आंखों में इस औरत के लिए हमदर्दी का दरिया लहरा रहा था।

बस, फिर क्या था? मैंने तो उसे जीयन्दाणी की कामयाबी के लिए रातों का सुख लुटाने वाली, ठण्डा खाना खाने वाली, रातों को देर तक उसकी राह ताकने वाली देवी और जाने क्या—क्या उपाधियां दे डाली। उषा उसके गले से लिपटकर बोली, "कहां सो रहा है जीयन्दाणी?" यह सुनते ही उसने तड़प कर खुद को अलग किया।

हम सब दोस्त यह देखकर हैरान थे कि सामने के कमरे में ड्रेसिंग टेबिल के आगे बैठा हुआ जीयन्दाणी मोटे टॉवल से अपना सिर पोंछ रहा था।

"अरे जीयन्दाणी तुम?" हम चारों के मुंह से चीख निकल पड़ी। दूसरे पल ही मैंने गुस्से से उबलते हुए पूछा, "यह फोन किसने किया था आज?"

"मैंने किया था। क्या पूरे पन्द्रह दिन तक कोई अपने जिन्दा दोस्त को भी भुला सकता है? इसलिए मैं बोला था कि मर गया जीयन्दाणी। क्यों, क्या मुझे गुस्सा नहीं आएगा?"

"अरे भाई, तीन घण्टे का नाटक लिखा है 'नव आत्मा'। सोचा था, सरप्राइज दूंगा।" मैंने बताया।

लेकिन सबके तेज ठहाकों के बीच मेरी आवाज दब सी गई। उनके सामने मैं अप्रैल फूल बनकर जो खड़ा था।

अनुवाद : गायत्री

❑❑❑